उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)

अ

उत्तराखण्ड

डी कोड सं० (परिषद् कार्यालय द्वारा भरा जायेगा।)

'डी' कोड संख्या–

ट–परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

विषय इतिहास

प्रश्नपत्र पर अंकित संकेत क्र– 410(Cont)

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाये–

(उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गयी है।)

केन्द्र संख्या–

कक्ष निरीक्षक का नाम

परीक्षा कक्ष संख्या– 0 4 दिनांक 21/03/18

कक्ष निरीक्षक का पूर्ण

इण्टरमीडिएट परीक्षा, उत्तराखण्ड अ (12 पन्ने)

(परीक्षक निम्न तालिका में प्रत्येक विवरण यथास्थान भरें।)

'डी' कोड संख्या (परिषद् कार्यालय द्वारा भरा जाएगा)

'डी' कोड संख्या–

'ब' उत्तर–पुस्तिकाओं की संख्या →

ब1	ब2	ब3	ब4

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक →
(कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाये)

विषय इतिहास प्रश्नपत्र पर अंकित संकेताक्र 410(Cont)

परीक्षा का दिन बुधवार परीक्षा की तिथि 21/03/18

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तर–पुस्तिका का मूल्यांकन संलग्नित प्रश्न–पत्र संकेताक्र तथा मूल्यांकन निर्देश के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का कुल पृष्ठ पर आधारित क फलकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है एवं हर एक में प्राप्तांकों की अंकना कर फलकों पुनः मिलान क

प्रश्न ① उत्तर :- हड़प्पा सभ्यता में मनकों का निर्माण किया जाता था इसके लिए वह अनेक देशों से पदार्थों का प्रयोग करने के लिए आयात करते थे, जिसमें सुलेमानी, चकमक, हीरा आदि पदार्थों को विदेशों से मंगवाया जाता था।

② उत्तर :- प्रमुख राजनीतिक केन्द्र :-
① तक्षशिला ② पाटलिपुत्र ③ मगध ④ कौशल

③ उत्तर :- एक ब्राह्मणीय पद्धति जो लगभग 1000 ई०पू० प्रकाश में आई थी, वह लोगों को उनके गोत्रों में बाँधने की थी, इसमें प्रत्येक गोत्र का नाम किसी ऋषि के नाम पर होता था, इसके आधार पर दो मान्यताएँ थी :-
① विवाह के पश्चात लड़की का गोत्र पिता के गोत्र से नहीं पति के गोत्र से होगा।
② एक ही गोत्र में विवाह सम्बन्ध निषिद्ध था।

④ उत्तर :- हड़प्पा सभ्यता की जल निकास प्रणाली नगर नियोजन के और संकेत करती है, प्रत्येक शहर में नालियाँ होती थी, जो आगे चलकर शहर की नालियों से मिलती है, जिससे शहर का गन्दा पानी शहर से बाहर निकाला जाता था, इसमें कुछ दूरी पर शोषक कूप होते थे, जिससे नालियों का पानी रुके ना, छोटी नालियाँ 12 से 18 इंच की होती है।
इस जल निकास प्रणाली को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ इस कार्य हेतु प्रशासकीय तन्त्र काम किया जाता था, जो इस कार्य का क्रियान्वयन करता था, सारा पानी इन नालियों के माध्यम से शहर के बाहर चला जाता है ये आपस समकोण पर सड़कों के समान एक दूसरे को काटती है जब कभी इन नालियों से जल भराव होता था तब शोषक कूप के द्वारा यह पानी आसानी से नीचे चला जाता था।

⑤ उत्तर :-

जैन धर्म की महत्वपूर्ण शिक्षाएं :-

जैन धर्म ईश्वर को सृष्टि रचियता एवं पालनकर्ता के रूप मे स्वीकार नही करता उसके अनुसार संसार 6 तत्वो आकाश, काल, धर्म, अधर्म, पुद्गल, जीव से बना है इसकी प्रमुख शिक्षाएँ निम्नलिखित है :-

① यह एक मानवतावादी धर्म है।
② यह ईश्वर को सृष्टि रचिता के रूप मे स्वीकार नही करता
③ यह वेद प्रणायाम को नही मानता है।
④ यह अहिंसा मूलक धर्म है।
⑤ इसमे तीर्थंकरो की पूजा की जाती है।
⑥ निर्वाण प्राप्ति के लिए सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र को अपनाता है।
⑦ यह निवृत्ति मार्गी है तथा निर्वाण को लक्ष्य मानता है

बौद्ध धर्म की महत्वपूर्ण शिक्षाएं :-

जैन धर्म के भाँति बौद्ध धर्म भी मानवतावादी धर्म है, और ईश्वर की धारणा को नही मानता, इसकी प्रमुख शिक्षाए निम्न है :-

(1) इस धर्म मे महात्मा बुद्ध की पूजा की जाती है।
(2) इस का प्रमुख लक्ष्य निर्वाण है।
(3) यह निर्वाण के लिए बुद्ध, धम्म, बुद्धिसम्म का पालन करता है।
(4) यह एक अहिंसा मूलक धर्म है
(5) यह आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार नही करता है,
(6) यह वेद प्रणायम का विरोध करता है
(7) यह धर्म बहुदेववाद का विरोध करता है।
(8) प्रारम्भ मे यह मूर्ति पूजा को आडम्बर मानता था किन्तु कालान्तर मे समय ने इसे अपना लिया।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि दोनों धर्मों की शिक्षाओं में काफी समानता पाई जाती है, और दोनों धर्म निर्वाण प्राप्ति पर बल देते हैं।

बौद्ध धर्म के स्थापक महात्मा बुद्ध और जैन धर्म के स्थापक महावीर जैन दोनों ही सच्चे एवं त्यागी से सम्बन्धित थे इन दोनों धर्मों में अनेक विभिन्नताएँ भी पायी जाती हैं जिसमें से प्रमुख यह है कि जैन धर्म बौद्ध धर्म से अधिक प्राचीन है।

प्रश्न (5) उत्तर अशोक से पूर्व किसी भी शासक ने जनता की नैतिक एवं धार्मिक उन्नति हेतु प्रयास नहीं किए, अशोक ने धार्मिक एवं नैतिक उन्नति का कार्यभार धर्म-उपदेशकों व उलेमाओं के ऊपर दिया था। अशोक ही एक ऐसा सम्राट था जिसने लोगों की नैतिक उन्नति के लिए प्रयास किए, उसने अपने राज्य में अनेक कल्याणकारी कार्य सम्पादित किए जिससे लोगों के जीवन में उत्थान हो सके।

अशोक ने अनेक कल्याणकारी कार्यों के साथ-साथ मनुष्य को सहजुता का आध्यात्मिक ज्ञान भी दिया।

अशोक द्वारा सम्पादित कार्य निम्नलिखित है।

लोक कल्याणकारी कार्य:-

अशोक ने अपने शासन काल में मांस-मदिरा, जुआ, जीव हत्या आदि पर कठोर प्रतिबंध लगा दिया और कठोर दण्ड का प्रावधान निर्धारित कर दिया।

अशोक द्वारा सम्पादित अनेक लोक कल्याणकारी कार्य निम्नलिखित हैं:-

(1) सरकार द्वारा सड़के, कुएँ, धर्मशालाएँ खोली गई शहर मे अनेक उद्योगों को स्थापित किया गया और बड़ी मात्रा मे वृक्षारोपण किया गया

(2) शहर भर मे सरकारी दानशालाएँ खोली गई जिसमे 'सुरन्य' नामक अधिकारी दान का वितरण करता था।

(3) मनुष्य एवं पशुओं के स्वास्थ्य की रक्षा हेतु औषधशालाएँ खोली गई जिसमे दोनो के लिए मुफ्त चिकित्सा की व्यवस्था थी

(4) जनसमान्य के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए धान्य, क्षार, लवण, पेय पदार्थ मे मिलावट करना दण्डनीय अपराध घोषित किया गया

(5) सड़को पर कूड़ा फेंकना, कीचड़ जमा करना भी दण्डनीय अपराध घोषित किया था व इसके लिए कठोर दण्ड की व्यवस्था थी

(6) पशुओं के साथ दुर्व्यवहार पर सख्त कानून था

(7) बाढ़ अकालकाल की स्थिति मे सरकार द्वारा आर्थिक मदद की व्यवस्था थी

(8) सड़को पर पशुवध निषिद्ध कर दिए गए और इसके लिए कठोर दण्ड था।

मध्यकालीन भारत

प्रश्न-(4) सगुण भक्ति परम्परा वह है जिसमे किसी व्यक्ति को या किसी स्वरूप को ईश्वर मानकर उसकी आराधना की जाती है और उसी की भक्ति की जाती है जैसे :- मीरा सगुण भक्ति परम्परा से सम्बन्धित थी।

उत्तर :-

इसके विपरीत निर्गुण भक्ति परंपरा मे किसी ईश्वर की आराधना नही की जाती। जैसे :- कबीर निर्गुण परम्परा से सम्बन्धित थे।

प्रश्न :-

(8) उत्तर:- खालसा सिक्ख समुदाय से सम्बन्धित है और यह गुरु नानक द्वारा बताए आदर्शों का पालन करते हैं।

प्रश्न :-

(9) उत्तर:- सभी सूफी नगर के निकट खानकाह बनाकर रहते थे, ये खानकाह ऐसे स्थानों पर बनाए जाते हैं जहाँ गरीब, दलित, निर्धन, अल्पसंख्यक रहते थे जिन्हें प्यार व सहानुभूति की आवश्यकता होती है, ये घास-फूस मिट्टी आदि से बने होते थे, इसमें दो कमरे सूफी परिवारों के लिए होते थे, एक बड़ा हॉल या जमातखाना होता था जिसमें धार्मिक शिक्षा दी जाती थी ये खानकाह प्रत्येक समय प्रत्येक मनुष्य के लिए खुले रहते थे।

प्रश्न (10) उत्तर इब्नबतूता ने भारतीय शहरों को उन लोगों के लिए उपयुक्त समझा जिनके पास आवश्यक रुपया, कला, कौशल था, यह शहर अधिक चमक-दमक वाली धनी आबादी के थे, जहाँ अनेक प्रकार की परम्पराएँ पायी जाती थी इब्नबतूता दिल्ली को भारत का सबसे बड़ा शहर मानता था, वह कहता है कि दिल्ली बड़ी घनी आबादी से भरा शहर था और यह क्षेत्रफल में भी काफी आगे था, दौलताबाद भी कम नहीं था वह आकार में दिल्ली को चुनौती देता था, इसने बताया कि दौलताबाद में महिला और पुरुषों के लिए एक गायन बाजार था जिसे ताराबाद कहते हैं, इन शहरों में अनेक धार्मिक उत्सव मनाये जाते थे और अनेक प्रकार के मनोरंजन के साधन थे बाजार में आवश्यक रुपया और कौशल था वह उपभोक्ताओं को आप्त करते थे, अन्यथा के लिए इन शहरों में संघर्ष भरा जीवन व्यतीत करता था इब्नबतूता लिखता है कि महिला की डाक प्रणाली को देखकर काफी आश्चर्य चकित

हुआ, इसके कारण न केवल सूचनाओं की गोपनीयता आसान हुआ वरन् उद्योग पर समान प्रसारित करना भी सम्भव हुआ इसमें दो प्रकार के सैनिक होते थे पैदल सेना या अश्व सेना इब्नबतूता ने मुहम्मद तुगलक के शासन काल में विस्तृत जानकारी प्रदान की है। और अपनी पुस्तक रिहला में भारत की सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक सांस्कृतिक के बारे में विस्तृत जानकारी दी है।

प्रश्न:-

(ग) उत्तर जमींदार अपनी जमीन के मालिक होते थे, उन्हें उनकी ऊँची हैसियत के कारण कुछ आर्थिक और सामाजिक अधिकार प्राप्त थे उनकी बड़ी हुई हैसियत का एक कारण माल तथा दूसरा विशेष प्रकार की सेवाएँ थी जिसे (खिदमत) कहा जाता है, इसकी ताकत का कारण इनकी बड़ी जिस्तृत खालिसा जमीन थी। जिसे सम्पत्ति या मिल्कियत कहा जाता है। इसके सैनिक संसाधन सुदृढ़ दुर्ग था जिसमें पैदल सेना, तोप खाने बारूद आदि के गढ़ होते थे।

गाँव में बड़ी बड़ी भूमि पर इनका अधिकार होता था प्रफुल्ल फडनवीस इस ओर इशारा करते हैं कि जमींदारों और ब्राह्मणों ने पहले ही ग्रामीण समाज पर अपना एकाधिकार कर लिया था अतः फडनवीस का मानना था कि जमींदारों ने ग्रामीण समाज में पहले चढ़ी सत्ता पर अपना अधिकार सुदृढ़ कर दिया था।

उत्तर भारत में जाटों और राजपूतों ने मिलकर कृषि समाज को एकजुट में बाँधा उत्पन्न की थी वे समाज की रीढ़ कृषि व बस्ती अंचल रखते थे।

जमींदार शोषण करने वाला वर्ग था किन्तु किसानों से हटके समवर्ती में पारिवारिक एवं पैतृकतावाद

का सुर था और दो उदाहरण इस बात की पुष्टि करते हैं।
पहला कि जहाँ आन्ध्र क्षेत्रों में बड़ी बेवाकी थी
भू राजस्व व्यवस्था के लिए शासकों को जिम्मेदार माना
जहाँ उन्होंने जमींदारों को किसानों के शोषकों के रूप
में नहीं बताया था।
दूसरा जब कभी राज्य में भूमि या किसान
विद्रोह हुए तो जमींदारों का साथ किसानों ने बड़ी
संख्या में दिया था।

प्रश्न (15) उत्तर :- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना चौदहवीं शताब्दी में हुई थी, यहाँ अनेक शासकों ने शासन किया, कृष्णदेवराय विजयनगर साम्राज्य का सबसे महत्वपूर्ण शासक था।
विजयनगर साम्राज्य में समाज अनेक अनेक वर्गों में विभाजित था, जिसमें वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी, ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों में यह यह समाज वर्गीकृत था विजयनगर साम्राज्य में अनेक समुदाय के लोग निवास करते थे क्योंकि विदेशों के आगमन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था और यहाँ, अन्य से कई अरबी, फारसी, हिब्रू, सीरियाई, हिन्दू, मुस्लिम समुदाय यहूदी समेत कई समुदाय के लोग निवास करते थे। कृष्णदेवराय सभी राजा धार्मिक तथा साहित्य प्रेमी थे। विजयनगर के सभी राजाओं ने कवियों और विद्वानों को अपने समाज में आश्रय दिया था।
विजयनगर साम्राज्य में स्त्रीयों की स्थिति आदिक सुदृढ़ नहीं थी अनेक महिलाओं ने साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था इसलिए इनका साहित्य में योगदान नगण्य नहीं है। कृष्णदेवराय ने अनेक युद्धों को जीतकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया था, उनके शासकों ने अनेक ग्रन्थों की रचना की स्वयं कृष्णदेव राय ने तमिल भाषा में एक ग्रन्थ की रचना की थी।

इस साम्राज्य का शेष विश्व के साथ व्यापारिक सम्बन्ध थे और यह अनेक वस्तुओं का आयात और निर्यात करता था। इसकी स्थापना सन् 1336 में हरिहर और बुक्का नामक दो भाइयों ने की थी।

विजयनगर में अधिकांश जनता कृषि पर आधारित थी। कृषि सुविधाएँ उपलब्ध कराने में यहाँ के शासक अग्रणीय थे। भूमि विस्तार सुविधाओं से भरपूर व उपजाऊ थी। मिट्टी नम और काली थी। भू-राजस्व वसूल नहीं किया जाता है। विजयनगर में हर्यक नदी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी उद्योगों को स्थापित किया गया था पशुपालन भी होता था। व्यापार विजयनगर साम्राज्य द्वारा होता था।

सन् 1565 में विजयनगर साम्राज्य पर आक्रमण कर उसे लूटा गया और कालान्तर में यह उजड़ गया किन्तु कृष्णा-तुंगभद्रा नदी के लोगों ने इसे हम्पी नाम से याद रखा यह इनकी माल्देवी पम्पा देवी के नाम पर आधारित था।

प्रश्न (13) उत्तर: भारत में मुगल साम्राज्य की नींव बाबर ने सन् 1526 में डाली थी। जब भारत में (1526) इब्राहिम लोदी का शासन था तो बाबर ने भारत पर आक्रमण किया। यह आक्रमण पानीपत के प्रथम युद्ध के नाम से जाना जाता है। बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराकर भारत पर शासन स्थापित कर दिया और 1526 से 1530 तक भारत पर शासन किया था। 1530 में मृत्यु के पश्चात 1530-1540, 1555-1556 तक हुमायूँ ने शासन किया (1540-1555) तक शेरशाह सूरी ने भारत पर शासन किया।

इसके शासनकाल में अनेक इमारतों का निर्माण किया गया था।

1556 - 1605 तक अकबर ने शासन किया, अकबर मुगल वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक माना जाता है। 1556 में बैरमखाँ के साथ पानीपत का दूसरा युद्ध लड़ा और विजय प्राप्त की, अकबर को आगामी में ईश्वर का दर्जा प्रदान किया था। अकबर ने अनेक लोककल्याणी कार्य सम्पादित किए जिस कारण वह इस देश में इतनी लोकप्रियता हासिल की।

अकबर ने सन 1560 में नयी राजस्व व्यवस्था लागू की थी, जिसके निर्माण में आबादान रखे थे और मनसबदारी व्यवस्था, दीन-ए-इलाही, तीर्थ कर की समाप्ति, भारतीय मुसलमानों व महिलाओं को शासकीय में आरक्षण आदि कार्य सम्पादित किए। अनेक इमारतों और महलों का निर्माण करवाया, जिसमें बौद्धा बाई का महल, फतेहपुरी सिक्री का बुलन्द दरवाजा प्रमुख है।

1605 - 1628 तक काल में अकबर के पुत्र जहाँगीर ने शासन किया था। जिसने अपने शासनकाल में काफी अत्याचार किए थे।

1628 - 1658 तक शाहजहाँ ने शासन किया इसने भारत में स्थापत्य के क्षेत्र में अनेक अद्भुत नमूने पेश किए थे, जैसे - ताजमहल, लाल किला, मयूराज महल आदि। इसने तख्ते-ताऊस नाम का एक बेहतरीन सिंहासन बनाया था, जिसे नादिशाह नामक लुटेरा अपने साथ ले गया।

1658 - 1707 तक काबिज पर औरंगजेब ने शासन किया था, जिसने काफी दमनकारी नीतियों का समावेश किया था।

आधुनिक भारत

(14) उत्तर — अंग्रेजो ने सन् 1856 मे इस्तमरारी बन्दोबस्त लागू कर दिया इसमे सीधे काश्तकारो से मालगुजारी का सौदा किया जाता था और ताल्लुकदारो को यह कहते हुए निष्कासित किया जा रहा था कि वे दमनकारी थे।

(15) उत्तर :- फ्रांसिस बुकानन एक चिकित्सक था जिसने बंगाल मे अपनी सेवा प्रदान की थी इसने राजमहल की पहाड़ियो का दौरा किया जिसके बारे मे इसने कहा है कि वह एक ऐसा क्षेत्र है जिसकी चट्टानो को हल्के से नही लिया जा सकता यह एक व्यापक सैकड़ो क्षेत्र है। बहुत कम लोग यहाँ जाने की हिम्मत कर पाते है।

(16) उत्तर — ईस्ट समुदाय ऋणदाताओ को ओथेलाज समझते थे क्योकि वे कृषको की बकाया राशि को बढ़ाते जा रहे थे। और ब्याज की दरो को मनमा करने मे लगे थे। और ब्याज की दरो को बकाया राशि को जोड़ते जा रहे थे।

(17) उत्तर:- 1857 के विद्रोह के राजनीतिक कारण:-

1857 के विद्रोह के प्रमुख राजनीतिक कारण निम्नलिखित है।

(1) लार्ड डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति:- 1857 के विद्रोह का कारण लार्ड डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति थी।

(2) अंग्रेजो द्वारा मुगलो का विरोध:- अंग्रेजो ने मुगलो का बड़ी भारी मात्रा मे विरोध करना प्रारम्भ किया।

(3) सरकारी नौकरियो मे भारतीयो की उपेक्षा:- ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयो को सरकारी नौकरियो मे काम नही था।

(4) ईस्ट इण्डिया कम्पनी का कुशासन:- 1857 के विद्रोह का प्रमुख कारणो मे उपर्युक्त तथ्य शामिल था।

आर्थिक कारण:-

(1) उद्योग धंधो का विनाश:- बड़ी मात्रा मे भारतीय उद्योग धंधो का विनाश हुआ।

(2) कृषको का शोषण:- कृषको का बड़ी मात्रा मे शोषण हुआ था।

(3) भारत मे बढ़ती बेरोजगारी:- भारत मे बेरोजगारी की दर काफी अधिक थी।

प्रश्न

(10) उत्तर: महात्मा गाँधी और नेहरू जी की न्याय प्रियता पर अटूट विश्वास था, किन्तु 13 अप्रैल सन् 1919 को जलियाँवाला बाग में मोटीवारी ने गाँधी जी को राजा के प्रति अपने रोष को बदलने पर मजबूर कर दिया और विदेशी के स्वरूप के बदले काला

महात्मा गाँधी जहाँ अहिंसा, शान्तिपूर्ण और अहिंसक रूप से स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष कर रहे थे वहीं दूसरी ओर हमारे देश के क्रान्तिकारी भी सक्रिय कार्य कर रहे थे। जिससे सरकार की उनके रूप को देखना पड़ा।

अब महात्मा गाँधी ने शान्तिकारी स्वरूप को अपनाया और विदेशी वस्तुओं की हर नीति का विरोध किया था।

सन् 1920 में इसके अलावा असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया और सन् 1930 में गाँधी जी ने नमक कानून तोड़ा था और सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारम्भ किया गया था।

इस कारण भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त कराने में गाँधी जी की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

(७) उत्तर:- औपनिवेशिक शासन काल मे भारत का आधा आयात और निर्यात बम्बई से होता था। इस व्यापार की प्रमुख वस्तु अफीम थी, एक दर्जन कम्पनी चीन को अफीम का निर्यात करती थी, और इस कार्य मे भारत के व्यापारी और बिचौलिये शामिल थे, जिन्होने बम्बई की अर्थव्यवस्था को राजस्थान, सिन्ध, मालवा जैसे अफीम उत्पादक राज्यो से जोड़ने मे मदद की थी, और इसे भारतीय पूंजीपति वर्ग का विकास हुआ।

भारतीय पूंजीपति वर्ग मे हिन्दू, मुसलमान, अरबी, फारसी, कोंकणी, मारवाड़ी आदि सम्प्रदाय के लोग शामिल थे।

सन 1869 मे जब स्वेज नहर को खोला गया तो बम्बई की अर्थव्यवस्था और भी शक्तिशाली हो गई और बम्बई सरकार और व्यापारियो ने इसका फायदा उठाते हुए, बम्बई को भारत का प्रवेश द्वार घोषित कर दिया था।

यह वह वह समय था जब सरकार मुम्बई मे आधुनिक व्यापार रोंच का निर्माण कर रही थी और भारतीय व्यापारियो ने भी अनेक उद्योगो को स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया था।

इस प्रकार अपने आवश्यक संसाधन और साधन के कारण औपनिवेशिक काल मे भी उन्होने अपने आप को बेहतरीन ढंग से स्थापित किया था।

(20) उत्तर: संविधान का स्वरूप तय करने वाली प्रमुख ऐतिहासिक शक्ति भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की थी, इसने भारतीय संविधान को धर्मनिरपेक्ष और लोकतान्त्रिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

इसके अलावा उदारवादी हिन्दुस्तानी और उदारवादी मुसलमान जो विभाजन के विरुद्ध थे ने भी भारत को धर्मनिरपेक्ष बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाने की स्वतन्त्रता और अधिकार होने चाहिए। सर्वप्रथम विवाद भाषा को लेकर था कि भारत की राष्ट्रीय भाषा क्या होनी चाहिए।

महात्मा गांधी का मानना था कि भारत की भाषा ऐसी होनी चाहिए जो सम्पूर्ण भारत में प्रचलित थी।

आज भारतीय संविधान में भारतीय संविधान को संपूर्ण प्रभुता सम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष व लोकतान्त्रिक गणराज्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, और प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, प्रतिष्ठा की समता प्रदान करने हेतु, अवसर की समता प्रदान कराने हेतु तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा, राष्ट्र की एकता व अखण्डता को सुनिश्चित करने वाले तत्व शामिल हैं।

विभाजन के दौरान भारत में राष्ट्रीय समुदाय या संविधान के स्वरूप को तय करने में कठिनाई का सामना करना पड़ा। किन्तु कई उदारवादी मुस्लिमों के कारण यह अवधारणा परिलक्षित हो गई और भारत का लोकतान्त्रिक देश के रूप में उदभव हुआ और आज भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश के रूप में विश्व में मौजूद है।

21

(इ) उत्तर

भारत - पाक विभाजन

भारत को स्वतन्त्रता तो प्राप्त हुई किन्तु विभाजन के साथ, भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस विभाजन के विरुद्ध थी, और भारतीय एकता के लिए अत्यन्त प्रयत्न कर रही थी।

महात्मा गाँधी तो यह तक कह दिया था कि भारत का विभाजन मेरी लाश पर से होगा फिर भी भारत का विभाजन हुआ।

भारत विभाजन का प्रमुख कारण निम्न है:-

(1) **ब्रिटिश शासक का प्रच्छन्न नीति:-** ब्रिटिश सरकार द्वारा फूट डालो, राज करो की नीति भारत विभाजन का प्रमुख कारण बना।

(2) **अन्तरिम सरकार की असफलता:-** मुस्लिम लीग ने भारत की अन्तरिम सरकार से बार-बार अड़ंगा बाजी उत्पन्न की थी।

(3) **साम्प्रदायिक भेदभाव:-** साम्प्रदायिक भेदभाव भी भारत - पाक विभाजन का प्रमुख कारण बना था, दोनों ही समुदाय अपने-२ धर्म के लिए संघर्ष कर रहे थी।

(4) **जिन्ना की हठधर्मिता:-** जिन्ना की हठधर्मिता के कारण भारत विभाजन अपरिहार्य हुआ था और मुस्लिम लीग के सर्वेसर्वा के रूप में अड़ंगेबाजी उत्पन्न की थी।

अनुक्रमांक
Roll No.

प्रश्न संख्या 22 (क) एवं (ख) के लिए
[For Q. No. 22 (a) & (b)]

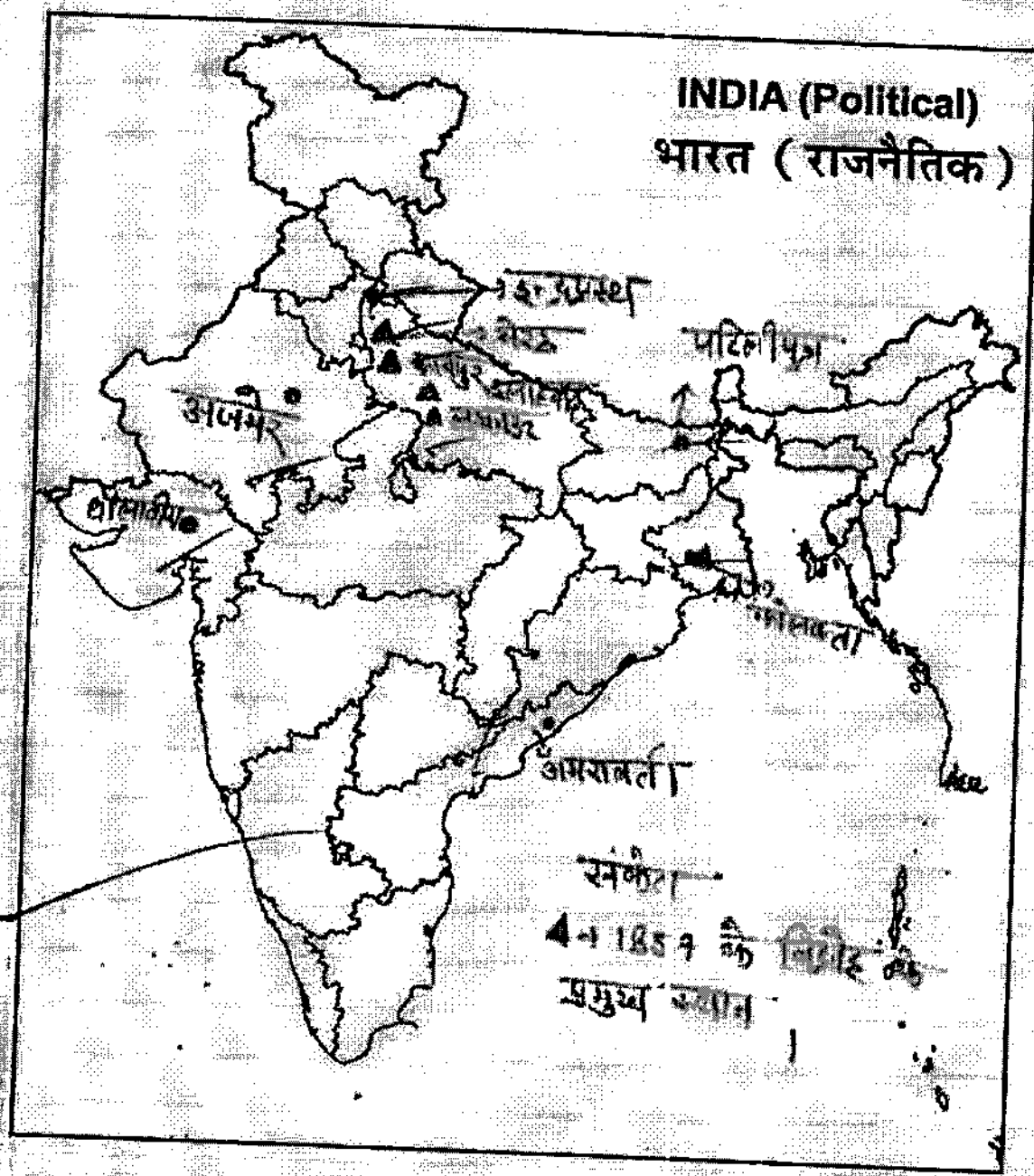

केवल परीक्षकों के लिए (For Examiners Only)	प्रश्न संख्या 22 (Q. No. 22)	क (a)						ख (b)					
		(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	योग Total	(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	योग Total
	प्रदत्त अंक (Marks Provided)												